मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 3

MVS–004

एम. ए. (वैदिक अध्ययन)

(एम. ए. वी. एस.)

सत्रांत परीक्षा

जून, 2025

एम.वी.एस.-004 : निरुक्त एवं प्रातिशाख्य

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *(i) यह प्रश्न-पत्र दो खण्डों में विभक्त है।*

(ii) दोनों खण्ड अनिवार्य हैं।

(iii) खण्डों में दिये गये निर्देशानुसार ही प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खण्ड—क

निर्देश: *—निम्नलिखित में से किन्हीं* ***चार*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न के लिए 15 अंक निर्धारित हैं।* $4 \times 15 = 60$

1. निरुक्त के आधार पर चार-पद एवं भाव-विकारों का वर्णन कीजिए।

2. भाषा विज्ञान के मौलिक सिद्धान्त का वर्णन कीजिए।

3. यास्क के निर्वचन सिद्धान्त की व्याख्या प्रस्तुत कीजिए।

4. वेद के अर्थवत्ता विषयक मतों का उल्लेख कीजिए।

5. मन्त्रों के विविध प्रतिपाद्य का वर्णन कीजिए।

6. अन्तरिक्ष स्थानीय तथा द्युस्थानीय देवताओं के स्वरूप का वर्णन कीजिए।

7. इन्द्र देवता के स्वरूप का विवेचनात्मक वर्णन कीजिए।

8. अग्नि का स्वरूप क्या है ? पठित अंश के आधार पर अग्नि देवता के स्वरूप का सोदाहरण वर्णन कीजिए।

खण्ड—ख

निर्देश:—*निम्नलिखित में से किन्हीं* ***चार*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न के लिए 10 अंक निर्धारित हैं।* $4 \times 10 = 40$

1. निरुक्त के रचनाकार का परिचय दीजिए।

2. यास्क के अनुसार देवताओं के स्वरूप पर टिप्पणी लिखिए।

3. उपसर्गों का विवेचनात्मक वर्णन कीजिए।

4. प्रतिशाख्य का अर्थ एवं प्रयोजन क्या है ? वर्णन कीजिए।

5. वृहद्देवता के स्वरूप का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

6. वैश्वानर एवं जातवेदस् क्या हैं ? वर्णन प्रस्तुत कीजिए।

7. शाखागत प्रातिशाख्यों के स्वरूप का वर्णन कीजिए।

8. प्रातिशाख्यों के अनुसार स्वर-सन्धि का वर्णन कीजिए।

× × × × ×